مارچ ۲۰۰۸ء

ماہنامہ

شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللهُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی

قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللهِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب

موسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

March 2008

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

वर्ष–4

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक – 9

माह मार्च – 2008 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
"लखनऊ"

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु0 र0 आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़्हीब नगरौरी

वार्षिक – 200 रु | मिलने का पता | क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

[redacted]

न0	मज़मून लेखक	पेज न0
1—	पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की पैदाइश और वफ़ात की तारीख	
	बिन्ते ज़हरा नक़वी ''नदल हिन्दी'' साहेबा	3
2—	हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0)	
	सय्यिदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह	5
3—	इमाम हुसैन (स0) कौन हैं? और वाक़ेअ—ए—कर्बला क्या है?	
	जनाब मौलाना सैय्यद अख़्तर हुसैन साहब नक़वी	12
4—	मद्हे रसूल (स0) व इमाम सादिक़ (अ0)	
	बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी' साहेबा	13
5—	अक़वाले रसूल (स0) व इमाम सादिक़ (अ0)	14
6—	मुख्य समाचार	
	इदारा	15

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की पैदाइश और वफ़ात की तारीख़

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी' साहेबा

अफ़सोस कि दुनिया के मुसलमान और तो और रसूले इस्लाम (स0) ही की पैदाइश और वफ़ात की तारीख़ में इख़्तेलाफ का शिकार हैं, परेशानियाँ पिछले ज़माने के तारीख़ लिखने वालों की तहरीरों की वजह से है। ज़रूरत है कि जिन तारीखों पर इमामिया मज़हब का इत्तेफ़ाक़ है उन्हें इमामिया फुक़्हा व मुहक़्क़ीन और अहलेसुन्नत के उलमा की किताबों से पेश किया जाए चुनाँनचे यह छोटा सा मज़मून इसी वजह से काग़ज के हवाले किया जा रहा है।

पैदाइश

अनुवाद– उम्दतुल मुहद्दिसीन मुल्ला मुहम्मद याक़ूब कुलैनी (रह0) ने किताब काफ़ी में लिखा है कि सैय्यिदुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) की मुबारक पैदाइश सन् 1 आमुलफ़ील (जिस साल अब्रहा काबा को ढाने के लिए हाथियों के लश्कर लेकर गया था) 12 रबीउल औव्वल जुमे के दिन ज़वाल के वक़्त हुई और शैख़ अबूजाफ़र तूसी (रह0) अपनी कुछ किताबों में और शहीदे औव्वल (रह0) दुरूस में लिखते हैं कि आंहज़रत 17 रबीउल औव्वल को जुमा के दिन, फज्र के वक़्त पैदा हुए।

मौलाना नवाब शैख़ अहमद हुसैन ख़ाँ 'मज़ाक़' अपनी क़ीमती किताब ''तारीख़े अहमदी'' में लिखते हैं कि ''तारीख़ुल ख़मीस'' में है कि रसूले मक़बूल 10वीं रबीउल औव्वल को और एक क़ौल के हिसाब से 12वीं रबीउल औव्वल और एक रिवायत के हिसाब से 17वीं रबीउल औव्वल को पैदा हुए।''

हक़ीक़ी तारीख़ लिखने वाले सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यिद अली नक़ी नक़वी अपनी किताब ''तारीख़े इस्लाम'' के पहले भाग में पेज 60–61 पर लिखते हैं कि जब रसूल (स0) की वफ़ात की तारीख़ मुसलमानों में एक न रह सकी तो पैदाइश की तारीख़ में अलगाव होना कोई ताज्जुब की बात नहीं, ग़नीमत यह है कि महीना एक ही है यानी रबीउल औव्वल मगर इस महीने में किस दिन पैदा हुए इस बारे में अहलेसुन्नत में कई क़ौल हैं, दूसरी, आठवीं, दसवीं और ज़्यादा मश्हूर 12वीं तारीख़ है और पीर का दिन। इमामिया आलिमों में कुलैनी (रह0) भी 12वीं को कहते हैं लेकिन ज़्यादातर शीआ आलिम 17 रबीउल औव्वल को जुमे के दिन पैदाइश मानते हैं चूँकि इस फिरक़े का दारो मदार रसूल (स0) के अहलेबैत

पर रहा है इसलिए उनका इस तारीख़ पर तक़रीबन एक होना इसका पता देता है कि अहलेबैत से उनको यही इल्म हासिल हुआ था और ज़ाहिर है कि घर की बात में घर वालों से ज़्यादा किसका बयान सही समझा जा सकता है। अल्लामा इब्ने शहरे आशोब का बयान है कि उस वक़्त हाथी वालों के वाक़ये के बाद 55 दिन गुज़रे थे लेकिन मसूदी 50 लिखते हैं।

''रह्नुमायाने इस्लाम'' (चौदह मासूमीनों का बयान) में सैय्यिदुल उलमा लिखते हैं कि 570 ई0 में जिस साल अब्रहा हबशी ने ख़ान–ए–काबा पर हाथियों की फौज के साथ चढ़ाई की है जिसे अरबों ने आमुलफ़ील के नाम से साल बना लिया उसी साल जुमे के दिन 17 रबीउल औव्वल को हिजाज़ की ज़मीन मक्का पर हज़रत (स0) की पैदाइश हुई।

वफ़ात

अनुवाद– शैख़ अबुजाफ़र तूसी (रह0) ने 'तहज़ीब' में लिखा है कि दूसरी रबीउल औव्वल को पीर के दिन ज़वाल के वक़्त मुनाफ़िक़ों के दिये हुए ज़हर की वजह से रसूल (स0) हमेशा के लिए जन्नत की तरफ़ चले गये।

''तारीख़े अह्मदी'' में तअल्लुक़दार परयाँवाँ नवाब अहमद हुसैन साहब लिखते हैं कि ''तबक़ात इब्ने साद'' में मुहम्मद बिन क़ैस से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0) की वफ़ात पीर के दिन दूसरी रबीउल औव्वल 11 हि0 को हुई और हज़रत आयशा से रिवायत है कि आँहज़रत ने पीर के दिन 12वीं रबीउल औव्वल को वफ़ात पाई।''

सरकार सैय्यिदुल उलमा ताबा सराह तारीख़े इस्लाम भाग–4 के पेज–178 पर लिखते हैं कि ''हज़रत (स0) की वफ़ात हमारे यहाँ की मश्हूर रिवायत के हिसाब से 28 सफर 11 हि0 को हुई और आम तौर पर अहलेसुन्नत 12 रबीउल औव्वल को मानते हैं, हमारे पुराने आलिमों में जनाब कुलैनी (काफ़ी के लेखक) ने भी इसी को माना है और इशारों के हिसाब से मेरे नज़दीक मज़बूत क़ौल यह है कि 2 रबीउल औव्वल को वफ़ात हुई है। और ''रह्नुमायाने इस्लाम'' में पेज 33–34 पर सैय्यिदुल उलमा लिखते हैं कि पीर का दिन दूसरी रबीउल औव्वल या एक क़ौल की बुनियाद पर 28 सफर की वह क़यामत वाली तारीख़ थी जब कुछ दिन बीमार रहने के बाद मुस्लेहे आलम, पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) ने दुनिया से इन्तेक़ाल किया। आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपके भाई और जानशीन हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) ने आपका कफ़न–दफ़न किया और आपकी मस्जिद के पास उसी हुजरे में जहाँ आपकी वफ़ात हुई थी दफ़न किया।

मदीना–ए–मुनव्वरा में आपका रौज़ा दुनिया के मुसलमानों की ज़ियारतगाह है जहाँ वह मक्का–ए–मुअज़्ज़मा के हज से पहले या बाद में जाते हैं और नबी की मस्जिद और रौज़े की ज़ियारत का शरफ़ हासिल करते है।

□□□

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०)

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादक– सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

नाम व नसब

जाफ़र (अ0) नाम कुन्नियत अबुअब्दिल्लाह, और सादिक़ लक़ब था। आप हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर के बेटे हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन के पोते और शहीदे कर्बला हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के परपोते थे। सिलसिलए इस्मत की आठवीं कड़ी और इमामों में से छठे इमाम थे आपकी माँ हज़रत मुहम्मद बिन अबीबक्र की पोती उम्मे फरवा थीं जिनके बाप क़ासिम बिन मुहम्मद मदीने के सात मशहूर फ़ुक़हा में से थे।

पैदाइश

83 हि0 में 17 रबीउलअव्वल को अपने जद रसलू ख़ुदा (स0) की पैदाइश की तारीख़ में आपकी पैदाइश हुई। इस वक़्त आपके दादा हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) भी ज़िन्दा थे आपके बुज़ुर्ग बाप हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की उम्र उस वक़्त छब्बीस साल की थी। रसूल (स0) के ख़ानदान में इस बढ़ोत्तरी का ख़ुशी से इस्तेक़बाल किया गया।

परवरिश और तरबियत

बारह साल आपने अपने बुज़ुर्ग बाप हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) के संरक्षण में परवरिश पाई। इमाम हुसैन (अ0) की शहादत के बाद से पैंतीस साल इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) का काम अल्लाह की इबादत और अपने मज़लूम बाप हज़रत सैय्यिदुश्शोहदा (अ0) को रोने के सिवा और कुछ न था। कर्बला के वाक़ेए को अभी सिर्फ़ 22 साल गुज़रे थे। इस मुद्दत में कर्बला का वाक़ेआ अपने असरात के लेहाज़ से अभी कल ही की बात मालूम होता था। इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) ने आँख खोली तो उसी ग़म के माहोल में, दिन–रात हुसैन (अ0) की शहादत का बयान और इस ग़म में नौहा व मातम और गिरया की आवाज़ों ने उनके दिल व दिमाग़ पर वह असर क़ायम किया कि जैसे वह ख़ुद वाक़ेए कर्बला में मौजूद होते फिर जब वह यह सुनते थे कि उनके पिता इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) भी छोटी उम्र में ही सही इस जिहाद में शामिल थे तो उनके दिल को यह एहसास बहुत तकलीफ़ देता होगा कि ख़ानदाने इस्मत के उस वक़्त के लोगों में एक मैं ही हूँ जो इस क़ाबिले फ़ख़्र आज़माइश में शरीक नहीं था। चुनाँनचे इसके बाद हमेशा और सारी उम्र इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) ने जिस–जिस तरह अपने मज़लूम दादा इमाम हुसैन (अ0) की याद को क़ायम रखने की कोशिश की है वह अपने आप में एक मिसाल है।

12 साल आपकी उम्र थी जब 95 हि0 में इमाम ज़ैनुलआबिदीन का साया सर से उठा, इसके बाद उन्नीस साल आपने अपने पिता हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की परवरिश में गुज़ारे। यह वह वक़्त था जब बनी उमैय्या की सियासत की बुनियादें हिल चुकी थीं और इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की तरफ इल्म हासिल करने के लिए लोग बढ़ रहे थे उस वक़्त अपने पिता के दर्स की मजलिस में हज़रत जाफ़र सादिक़ ही एक

वह तालिबेइल्म थे जो क़ुदरत की तरफ से इल्म के साँचे में ढाल कर पैदा किये गये थे। आप सफ़र और घर में दोनों वक़्त अपने पिता के साथ रहते थे। चुनाँनचे हिशाम बिन अब्दुल मलिक के बुलाने पर हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) जब दमिश्क़ गये तो उस सफ़र में भी इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) साथ थे इसका बयान पाँचवे इमाम के हालात में हो चुका है।

इमामत का ज़माना

114 हि0 में हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की वफ़ात हुई अब इमामत की ज़िम्मेदारियाँ इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) की तरफ आ गईं उस वक़्त दमिश्क़ में हिशाम बिन अब्दुल मलिक की हुकूमत थी। उसकी हुकूमत के ज़माने में मुल्क में सियासी लड़ाइयाँ बहुत तेज़ हो चुकी थीं। बनी उमैय्या के ज़ुल्म के बदले का जज़्बा तेज़ हो रहा था। और बनी फातिमा में बहुत से लोग हुकूमत से मुक़ाबले के लिए तैय्यार हो गये थे। उनमें मशहूर शख़सियत हज़रत ज़ैद की थी जो इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) के बड़े बेटे थे उनकी इबादत और तक़वा पूरे अरब में मशहूर था, मुस्तनद और सही हाफ़िज़े क़ुर्आन थे बनी उमैय्या के ज़ुल्मों से तंग आकर उन्होंने जिहाद के मैदान में क़दम रखा।

इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) के लिए यह मौक़ा बहुत ही नाज़ुक था। बनी उमैय्या के ज़ुल्मों की नफ़रत में ज़ाहिर है कि आप ज़ैद के साथ थे फिर जनाब ज़ैद आपके चचा भी थे जिनकी इज्ज़त आप ज़रूरी समझ रहे थे मगर आपकी निगाह अन्जाम को देख रही थी कि यह क़दम किसी फ़ायदा पहुँचाने वाले नतीजे तक नहीं पहुँच सकेगा। इसलिए अमली तौर से आप उनका साथ देना ठीक नहीं समझते थे मगर यह वाक़ेआ होते हुए भी ख़ुद उनसे आपको हमदर्दी थी आपने ठीक तरीक़े पर उन्हें वजह बताने की दावत दी। मगर इराक़ वालों की एक बड़ी जमात के इताअत और पैरवी करने के इक़रार ने जनाब ज़ैद को कामियाबी की उम्मीद दिला दी और आख़िर 120 हि0 में शाम की ज़ालिम फौज से तीन दिन तक बहादुरी के साथ जंग करने के बाद शहीद हुए। दुश्मन का बदला लेने का जज़्बा इतने पर ही ख़त्म नहीं हुआ बल्कि दफन हो चुकने के बाद उनकी लाश को क़ब्र से निकाला गया और सर को अलग करके हिशाम के पास तोहफे में भेजा गया और लाश को कूफ़े के दरवाज़े पर सूली दी गई और कई साल तक इसी तरह लटकाय रखा गया। जनाब ज़ैद के एक साल बाद उनके बेटे यहया बिन ज़ैद भी शहीद हुए। यक़ीनन इन हलात का इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) के दिल पर गहरा असर पड़ रहा था मगर वह जज़्बात से ऊपर फ़राएज़ की पाबन्दी थी कि इसके बाद भी आपने अपने ख़ामोश गुस्से को, जो उलूमे अहलेबैत के फैलाने और बढ़ाने की क़ुदरत की तरफ़ से आपके हवाले थे, बराबर जारी रखा।

हुकूमत का इन्क़ेलाब

बनी उमैय्याा का आख़री ज़माना हंगामों और सियासी परेशानियों का केन्द्र बन गया इसका नतीजा यह था कि बहुत जल्दी–जल्दी हुकूमतों में बदलाव हो रहा था और इसीलिए इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) को बहुत सी दुनियावी हुकूमतों के ज़माने से गुज़रना पड़ा। हिशाम बिन अब्दुलमलिक के बाद वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुलमालिक फिर यज़ीद बिन वलीद बिन अब्दुलमलिक इसके बाद इब्राहीम बिन वलीद बिन अब्दुलमलिक और आख़िर में मरवान हम्माद जिस पर बनीउमैय्या की हुकूमत ख़त्म हो गई।

जब हुकूमत की अन्दुरूनी कमज़ोरियाँ क़हरो

ग़लबे की चूलें हिला चुकी हों तो क़ुदरती बात है कि वह लोग जो इस हुकूमत के ज़ुल्मों का ज़मानों से निशाना बने रह चुके हों और जिन्हें उनके हुक़ूक़ से महरूम करके सिर्फ तशद्दुद की ताक़त से हंसने का मौक़ा न दिया गया हो, नफ्स की तबदीलियों को कमज़ोर पाकर फड़फड़ाने की कोशिश करेंगे और हुकूमत के शिकंजे को एक दम तोड़ देना चाहेंगे सिवाए ऐसे बड़े लोगों के जो जज़्बात की पैरवी से ऊपर हों। आम तौर पर इस तरह की बदले की कोशिशों में समझदारी का दामन भी हाथ से छूटना मुमकिन है मगर वह इन्सानी फितरत का एक कमज़ोर पहलू है जिससे ख़ास लोग ही अलग हो सकते हैं।

बनी हाशिम में आम तौर पर बनी उमैय्या की हुकूमत के इस आख़री ज़माने में इसलिए हरकत और अज़ीब बेचैनी पायी जा रही थी, इस बेचैनी से बनी अब्बास ने फायदा उठाया उन्होंने इस आख़री उमवी ज़माने में छुपकर इस्लामी मुल्कों में एक ऐसी जमाअत बनाई जिसने क़सम खाई थी कि हम हुकूमत को बनी उमैय्या से लेकर बनी हाशिम तक पहुँचाएंगे जिनका वह असली हक़ है हालांकि हक़ तो उनमें ख़ास लोगों ही का था जो ख़ुदा की तरफ से इन्सानियत को रास्ता दिखाने और सरदारी के हक़दार बनाए गये थे मगर वह यही जज़्बात से बुलन्द इन्सान थे जो मौक़े की सियासी रफ्तार से हंगामी फायदा हासिल करना अपना मक़सद नहीं रखते थे। बनी हाशिम के इन लोगों की ख़ामोशी बनी रहने तक उस हमदर्दी को, जो लोगों में बनी हाशिम के ख़ानदान के साथ पायी जाती थी, बनी अब्बास ने अपने लिये हुकूमत पाने का रास्ता बना लिया हालांकि उन्होंने हुकूमत पाने के साथ बनी हाशिम के असली हक़दारों से वैसा ही या उससे ज़्यादा सख़्त सुलूक किया जो बनी उमैय्या उनके साथ कर चुके थे। यह वाक़ेए मुख़्तलिफ इमामों के हालात में आगे आपके सामने आएंगे।

बनी अब्बास में से सबसे पहले मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने बनी उमैय्या के ख़िलाफ तहरीक शुरु की और ईरान में मुबल्लिग़ भेजे जो छुपकर लोगों से बनी हाशिम की वफादारी का अहद व वादा हासिल करें। मुहम्मद बिन अली के बाद उनके बेटे इब्राहीम क़ायम मक़ाम हुए। जनाब ज़ैद और उनके बेटे जनाब यह्या की दर्दनाक शहादत के वाक़ेए से बनी उमैय्या के ख़िलाफ ग़म व ग़ुस्सा बढ़ गया था। इससे भी बनी अब्बास ने फायदा उठाया और अबुसलमा ख़िलाली के ज़रिये से इराक़ में भी अपने असरात बनाने का मौक़ा मिला, धीरे–धीरे इस जमाअत के असरात में बढ़ोत्तरी हो गई और अबुमुस्लिम ख़ुरासानी की मदद से इराक़े अजम का पूरा इलाक़ा क़ब्ज़े में आ गया और बनी उमैय्या की तरफ़ के हाकिम को वहाँ भागना पड़ा। 129 हि0 से इराक़े अजम और ख़ुरासान वग़ैरा में बनी उमैय्या के हुकमरानों के नाम ख़ुतबे से निकालकर इब्राहीम बिन मुहम्मद का नाम मिला दिया गया।

अभी तक बनी उमैय्या की हुकूमत यह समझती थी कि यह एक मक़ामी मुख़ालिफ हुकूमत से है जो ईरान में सीमित है मगर अब जासूसों ने ख़बर दी कि इसका ताल्लुक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन अब्बास के साथ है जो जाबलक़ा नामक जगह में रहते हैं इसका नतीजा यह था कि इब्राहीम को क़ैद कर दिया गया और क़ैदख़ाने ही में फिर उनको क़त्ल कर दिया गया। उनके बाक़ी बचे लोग दूसरे लोगों के साथ भागकर इराक़ में अबुसलमा के पास चले गये। अबुमुस्लिम ख़ुरासानी को जब इन हालात की ख़बर हुई तो एक फौज को इराक़ की तरफ भेजा जिसने आम ताक़त को हराकर इराक़ को आज़ाद करा लिया।

अबुसलमा ख़िलाल जो वज़ीर आले मुहम्मद के नाम से मशहूर हैं बनी फातिमा के साथ अक़ीदत रखते थे उन्होंने कई ख़त औलादे रसूल में से कुछ बुजुर्गों के नाम लिखे और उनको ख़िलाफ़त क़बूल करने की दावत दी उनमें से एक ख़त हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के नाम भी था। सियासत की दुनिया में ऐसे मौक़े अपनी हूकूमत बनाने के लिए ग़नीमत समझे जाते हैं मगर वह इन्सानी ख़ुद्दारी और बेनियाज़ रहने का मिसाली मुजस्समा था जिसने अपने मन्सबी फ़र्ज़ के लेहाज़ से इस मौक़े को ठुकरा दिया और बजाए जवाब देने के गिरी हुई नज़र के साथ उस ख़त को आग के हवाले कर दिया।

इधर कूफ़े में अबुमुस्लिम ख़ुरासानी की पैरवी करने वालों और बनी अब्बास के चाहने वालों ने अब्दुल्लाह सफ़्फ़ाह के हाथ पर 14 रबीउस्सानी 132 हि0 को बैअत कर ली और उसको इस्लामी उम्मत का ख़लीफा और हाकिम क़बूल कर लिया। इराक़ में हुकूमत क़ायम करने के बाद उन्होंने दमिश्क़ पर चढ़ाई कर दी। मरवान हमार ने बड़ी फौज के साथ मुक़ाबला किया। मगर बहुत जल्द ही उसकी फौज की हार हुई। मरवान भाग गया और अफ्रीक़ा की ज़मीन पर पहुँचकर क़त्ल हुआ। इसके बाद सफ्फाह ने बनी उमैय्या का क़त्लेआम कराया। बनी उमैय्या के बादशाहों की क़ब्रें खुदवाईं और उनकी लाशों के साथ दहला देने वाले सुलूक किये गये इस तरह कुदरत का बदला जो उन लोगों से लिया जाना ज़रूरी था बनी अब्बास के हाथों दुनिया की नज़रों के सामने आया। 136 हि0 में अबुअब्दिल्लाह सफ़्फ़ाह बनी अब्बास के पहले ख़लीफा का इन्तेक़ाल हो गया जिसके बाद जिसके बाद उसका भाई अबुजाफर मन्सूर हुकूमत करने बैठा जो मन्सूर दवानेक़ी के नाम से मशहूर है।

सादात पर ज़ुल्म

यह पहले लिखा जा चुका कि बनी अब्बास ने उन हमदर्दियों से जो लोगों को बनी फातिमा के साथ थीं नाजाएज़ फायदा उठाया था और उन्होंने दुनिया को यह धोखा दिया कि हम रसूल (स0) के अहलेबैत के हक़ की हिफाज़त के लिए खड़े हुए हैं। चुनानचे उन्होंने रिज़ाए आले मुहम्मद (स0) ही के नाम पर लोगों को अपनी मदद व हिमायत पर आमादा किया था और इसी को अपनी जंग का नारा दिया था। इसलिए उन्हें हुकूमत में आने के बाद और बनी उमैय्या को तबाह करने के बाद सबसे बड़ा डर यह पैदा हुआ कि कहीं हमारा यह धोखा दुनिया पर खुल न जाए और यह तहरीक न पैदा हो जाए कि बनी अब्बास के बजाए बनी फातिमा के हवाले होनी चाहिए जो हक़ीक़त में आले रसूल (स0) हैं। अबुसलमा ख़िलाल बनी फातिमा के हमदर्दों में से था। इसलिए यह ख़तरा था कि वह इस तहरीक की हिमायत न करे। इसलिए सबसे पहले अबुसलमा को रास्ते से हटाया गया और वह उन एहसानों के बावजूद जो बनी अब्बास के साथ कर चुका था सफ्फाह ही के ज़माने में फसाद का निशाना बना और तलवार के घाट उतारा गया। ईरान में अबुमुस्लिम ख़ुरासानी का असर था। मन्सूर ने बड़ी मक्कारी और ग़द्दारी के साथ उसकी ज़िन्दगी को भी ख़त्म कर दिया।

अब उसे अपनी मनमानी कारवाइयों में किसी बड़े और असर वाले का डर न था। इसलिए उसके ज़ुल्म व सितम का रुख़ बनी फातिमा की तरफ मुड़ गया। मौलाना शिब्ली नोमानी सीरते नोमान में लिखते हैं ''सिर्फ बुरी सोंच पर मन्सूर ने अलवी सादात की जड़ काटनी शुरु कर दी जो लोग उनमें मशहूर थे उनके साथ

ज़्यादा बेरहमियाँ की गईं। मुहम्मद बिन इब्राहीम जो कि हुस्न व जमाल में मशहूर और इसी वजह से दीबाज कहलाते थे। ज़िन्दा दीवारों में चुनवा दिये गये। इन बेरहमियों की एक दास्तान है जिसके बयान करने को बड़ा सख़्त दिल चाहिए।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के दिल पर इन हालात का बहुत असर होता था। चुनानचे जब सादात बनी हसन बेड़ियों और जंजीरों में क़ैद करके मदीने से ले जाए जा रहे थे तो हज़रत एक मकान की आड़ में खड़े होकर उनकी हालत को देख कर रो रहे थे और फरमा रहे थे कि अफ़सोस मक्का व मदीना भी अम्न का शहर न रहा फिर आपने अन्सार की औलाद की हालत पर अफसोस किया कि अन्सार ने रसूल (स0) को इस अहद के साथ मदीने आने की दावत दी थी कि हम आपकी और आपकी औलाद की इस तरह हिफाज़त व हिमायत करेंगे जिस तरह अपने घर वालों और जान माल की हिफाज़त करते हैं मगर आज अन्सार की औलाद बाक़ी है और कोई इन सादात की मदद नहीं करता यह फरमाकर आप बैतुश्शरफ की तरफ वापस हुए और बीस दिन तक सख़्त बीमार रहे।

इन क़ैदियों में इमाम हसन (अ0) के बेटे अब्दुल्लाह महज़ भी थे जिन्होंने बड़ी उम्र में बहुत दिनों तक क़ैद की मुसीबतें उठाईं। उनके बेटे मुहम्मद नफ्से ज़किय्या ने हुकूमत का मुक़ाबला किया और 145 हि0 में दुश्मन के हाथ से मदीने के क़रीब शहीद हुए। जवान बेटे का सर बूढ़े बाप के पास क़ैदख़ाने में भेजा गया और यह सद्मा ऐसा था कि जिससे अब्दुल्लाह महज़ फिर ज़िन्दा न रह सके और उनकी रूह जिस्म से निकल गई, इसके बाद अब्दुल्लाह के दूसरे बेटे इब्राहीम भी मन्सूर की फौज के मुक़ाबले में जंग करके कूफ़ा में शहीद हुए। इसी तरह अब्बास इब्ने हसन, उमर इब्ने हसन मुसन्ना, अली व अब्दुल्लाह नफ्से ज़किया के बेटे, मूसा और यह्या नफ्से ज़किया के भाई वग़ैरा भी बेदर्दी और बेरहमी से क़त्ल किये गये। बहुत से सादात इमारतों में ज़िन्दा चुनवा दिये गये।

इमाम के साथ बदसुलूकियाँ

इन तमाम बुरे हालात के बाद भी जिनका बयान बहुत ही कमी के साथ ऊपर लिखा गया। इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) ख़ामोशी के साथ अहलेबैत के उलूम के फैलाने में लगे रहे और इसका नतीजा यह था कि वह लोग भी जो आपको हक़ीक़ी इमाम नहीं समझते थे या क़बूल करना नहीं चाहते थे वह भी आपकी इल्मी बड़ाई को मानते हुए आपके दर्स के में दाख़िल होने को फख़्र समझते थे।

मन्सूर ने पहले हज़रत की इल्मी बड़ाई का असर लोगों के दिल से कम करने के लिए एक चाल यह चली कि आपके मुक़ाबले में ऐसे लोगों को फक़ीह और आलिम की हैसियत से खड़ा कर दिया जो आपके शार्गिदों के सामने भी ज़बान खोलने की ताक़त नहीं रखते थे और फिर वह ख़ुद इसका इक़रार करते थे कि हमें जो कुछ आया वह इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) की बारगाह से हासिल हुआ मगर हुकूमत उनके फतवों को सही क़रार देता था और इस तरह हज़रत सादिक़ (अ0) आले मुहम्मद (स0) की मरजईयत को ख़त्म करने की कोशिश कर रहा था जब इसमें नाकामी हुई तो हज़रत को तकलीफ देने और क़त्ल या गिरफ्तार करने की चालें चली जाने लगीं इसलिए हर हर शहर और हर हर क़स्बे में जासूस मुक़र्रर किये गये जो शियों के हालात पर नज़र रखें और जिसके बारे में यह मालूम हो कि वह इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) की मुहब्बत का दम भरता है

उसे गिरफ्तार किया जाए।

चुनाँनचे मुअल्ला इब्ने हनीस उन ही शियों में से थे जो गिरफ्तार किये गये और ज़ुल्म व सितम के साथ शहीद किये गये। ख़ुद इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) को तक़रीबन पाँच बार मदीने से शाही दरबार में बुलाया गया जो आपके लिए सख़्त रूहानी तकलीफ़ की वजह थी यह और बात है कि किसी बार आपके ख़िलाफ कोई बहाना उसे ऐसा न मिल सका कि आपके क़ैद या क़त्ल किये जाने का हुक्म देता बल्कि इस सिलसिले में इराक़ के अन्दर एक ज़माने तक ठहरने से अहलेबैत के उलूम के फैलाने का दायरा बढ़ गया और इसको महसूस करके मन्सूर ने फिर आपको मदीने भिजवा दिया इसके बाद भी आप तकलीफ़ दिये जाने से महफ़ूज़ न रहे। यहाँ तक कि एक बार आपके घर में आग लगा दी गई ख़ुदा की क़ुदरत थी कि वह आग जल्द ही बुझ गई और आपके घर वालों और साथियों को कोई सदमा नहीं पहुँचा।

अख़लाक़ व ख़ूबियाँ

आप उसी इस्मत की एक कड़ी थे जिसे ख़ुदा ने पूरी इन्सानियत के लिए कामिल नमूना बनाकर पैदा ही किया था उनके अख़लाक़ व ख़ूबियाँ जिन्दगी के हर हिस्से में अलग ही हैसियत रखती थीं। ख़ास–ख़ास वक़्त जिनके बारे में तारीख़ लिखने वालों ने ख़ास तौर पर वाक़ेआत लिखे हैं, मेहमाँ नवाज़ी, ख़ैर–ख़ैरात, छुपकर ग़रीबों की ख़बर लेना, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक, लोगों को मुआफ़ करना सब्र व बर्दाश्त वग़ैरा हैं।

एक बार एक हाजी मदीने में आया। और रसूल (स0) की मस्जिद में सो गया आँख खुली तो उसे शक हुआ कि उसकी एक हज़ार की थैली मौजूद नहीं है उसने इधर देखा उधर देखा किसी को न पाया एक किनारे इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) नमाज़ पढ़ रहे थे वह आपको बिलकुल न पहचानता था आपके पास आकर कहने लगा कि ''मेरी थैली तुमने ली है'' हज़रत ने फरमायाः ''उसमें क्या था'' उसने कहा ''एक हज़ार दीनार'' हज़रत ने फरमायाः ''मेरे साथ मेरे मकान तक आओ'' वह आपके साथ हो गया। बैतुश्शरफ पर तशरीफ लाकर एक हज़ार दीनार उसके हवाले कर दिये। वह मस्जिद में वापस आ गया और अपना सामान उठाने लगा तो ख़ुद उसके दीनारों की थैली सामान में नज़र आई। यह देखकर वह बहुत शर्मिन्दा हुआ और दौड़ता हुआ फिर इमाम की ख़िदमत में आया और ग़लती मानते हुए मुआफ़ी चाही और दो हज़ार दीनार वापस करने चाहे, हज़रत ने फरमायाः ''हम जो कुछ दे देते हैं वह फिर वापस नहीं लेते''।

इस ज़माने में यह हालात सब ही की आँखों से देखे हुए है कि जब यह डर पैदा होता है कि अनाज मुश्किल से मिलेगा तो जिसको जितना मुमकिन हो वह अनाज ख़रीद कर रख लेता है मगर इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के किरदार का एक वाक़ेआ है कि एक बार आपने अपने वकील मोअ्तब से इरशाद फरमाया कि ''ग़ल्ला दिन बदिन मदीने में महंगा होता जा रहा है। हमारे यहाँ कितना ग़ल्ला होगा?'' मोअ्तब ने कहा कि ''हमें इस महंगाई और क़हत की तकलीफ़ का कोई डर नहीं है हमारे पास ग़ल्ले का इतना भण्डार है जो बहुत दिनों तक काफ़ी होगा।'' हज़रत ने फरमायाः ''यह तमाम ग़ल्ला बेच डालो इसके बाद जो हाल सबका हो वही हमारा भी हो'' और जब ग़ल्ला बेच दिया गया तो फरमायाः ''अब ख़ालिस गेहूँ की रोटी न पका करे बल्कि आधे गेहूँ और आधे जौ की, जहाँ तक मुमकिन हो हमें ग़रीबों का साथ देना चाहिए''।

आपका क़ायदा था कि आप मालदारों से ज़्यादा ग़रीबों की इज़्ज़त करते थे, मज़दूरों की बड़ी क़दर फरमाते थे, ख़ुद भी तिजारत करते थे और अक्सर अपने बाग़ों में ख़ुद से ही मेहनत करते थे। एक बार आप बेलचा हाथ में लिये बाग़

में काम कर रहे थे और पसीने से तमाम जिस्म तर हो गया था। किसी ने कहा यह बेलचा मुझे दे दीजिये कि मैं यह ख़िदमत अन्जाम दूँ। हज़रत ने फरमाया ''रोज़ी कमाने में धूप और गर्मी की तकलीफ़ सहना ऐब की बात नहीं। गुलामों और कनीज़ों पर वही मेहरबानी रहती थी जो उस घर की अलग ही ख़ूबी थी। इसका एक हैरत वाला नमूना यह है जिसे सुफ़यान सौरी ने बयान किया है कि मैं एक बार इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ देखा कि मुबारक चेहरे का रंग बदला हुआ है, मैंने वजह पूछी। फरमायाः ''मैंने रोका था कि कोई मकान की छत पर न चढ़े। इस वक़्त जो घर में गया तो देखा कि एक कनीज़ जो एक बच्चे की परवरिश पर लगी थी उसे गोद में लिये ज़ीने से ऊपर जा रही थी मुझे देखा तो ऐसा डरी कि घबराकर बच्चा उसके हाथ से छूट गया और इस सद्मे से जान दे बैठा। मुझे बच्चे के मरने का इतना ग़म नही हुआ जितना इसका अफ़सोस है कि उस कनीज़ पर इतना डर व ख़ौफ क्यों छा गया फिर हज़रत ने उस कनीज़ को पुकार कर फ़रमाया ''डरो नहीं मैंने तुमको ख़ुदा के रास्ते में आज़ाद कर दिया'' इसके बाद हज़रत बच्चे के कफ़न–दफ़न में लग गये।

उलूम की इशाअत

पूरी इस्लामी दुनिया में आपकी इल्मी बड़ाई मश्हूर थी, दूर–दूर से लोग इल्म हासिल करने के लिए आपकी ख़िदमत में आया करते थे। यहाँ तक कि आपके शार्गिदों की गिनती चार हज़ार तक पहुँच गई थी। उनमें फ़िक्ह के आलिम भी थे, तफसीर बयान करने वाले भी थे, और मुनाज़रा करने वाले भी। आपके दरबार में मज़हब के मुख़ालिफ लोग आ–आ कर सवाल पेश करते थे और आपके साथियों से और उनसे मुनाज़रे होते रहते थे जिन पर कभी–कभी मुनाज़रे के ख़त्म होने पर और मुख़ालिफ फ़रीक़ के हार मान कर चले जाने पर आप तब्सेरा भी फरमाते थे और साथियों को उनकी बहस के कमज़ोर पहलू भी बताते थे ताकि आगे वह इन बातों का ख़याल रखें। कभी आप ख़ुद भी मज़हब के मुख़ालिफ़ों और नास्तिकों से बहस करते थे, फ़िक़्ह और कलाम वग़ैरा के अन्जाने उलूम जैसे रियाज़ी और कीमिया वग़ैरा की भी कुछ शार्गिदों को तालीम दी थी। चुनाँनचे आपके साथियों में से जाबिर बिन हयान तरसूसी साइंस और रियाज़ी के फ़न के मश्हूर इमाम जिन्होंने चार सौ रिसाले इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) के इफ़ादात को हासिल करके लिखे। आपके साथियों में बहुत से बड़े फ़ुक़्हा थे जिन्होंने किताबें लिखीं जिनकी गिनती सैकड़ों तक पहुँती है।

वफ़ात

ऐसे मस्रूफ़ ज़िन्दगी रखने वाले इन्सान को हुकूमत व सरदारी हासिल करने की फ़िक्रों से क्या मतलब! मगर आपकी इल्मी मरजईयत और कमालात की शोहरत ही वक़्त की हुकूमत के लिए एक बड़ा ख़तरा लगी जबकि यह मालूम था कि असली ख़िलाफत के हक़दार यही हैं जब हुकूमत की तमाम कोशिशों के बाद भी कोई बहाना उसे आपके ख़िलाफ किसी खुले तौर पर क़दम उठाने के लिए न मिल सका तो आख़िर ख़ामोश चाल ज़हर की इख़्तियार की गई और ज़हर से भरे हुए अंगूर मदीने के हाकिम के ज़रिये से आपकी ख़िदमत में पेश किये गये जिनके खाते ही ज़हर का असर जिस्म में भर गया और 15 शौव्वाल 148 हि0 में 65 साल की उम्र में वफ़ात पाई आपके बड़े बेटे और जानशीन हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ0) ने कफ़न–दफ़न किया और जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और जन्नतुलबक़ी के उस अहाते में कि जहाँ इसके पहले इमाम हसन (अ0), इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) और इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) दफ़न हो चुके थे आपको भी दफ़न किया गया।

□□□

इमाम हुसैन (अ०)कौन हैं? और वाक़ेअ-ए-कर्बला क्या है?

जनाब मौलाना सैय्यद अख़्तर हुसैन साहब नक़वी

इमाम हुसैन (अ0) जनाब अबुतालिब के पोते और हज़रत अली (अ0) के बेटे और पैग़म्बर (स0) के नवासे थे अगर देखा जाए तो मालूम होगा कि यह उस माहौल में पले थे जिस माहौल की बुलन्दी का सही तसव्वुर भी हम नहीं कर सकते और यह उस पैग़म्बर (स0) की आग़ोश में पले थे जिसके रास्ते में काँटे बिछाए जाते थे फिर भी दीने हक़ के फैलाने से ज़बान न रोकते थे इसी वजह से दीन का पैग़ाम हम तक पहुँचा अब आप खुद ग़ौर कीजिये कि जो आदमी इस माहौल में पला होगा कि जब शाम के तख़्त पर बैठे हुए फासिक़ व फाजिर हाकिम ने इमाम हुसैन (अ0) से बैअत चाही और इमाम हुसैन (अ0) ने नहीं कह दी, उसने मज़ालिम ढाए उन्होंने फिर भी बैअत नहीं की यह किस लिए? वह सिर्फ़ अपनी जीत के लिए नहीं बल्कि दीन की हिफ़ाज़त के लिए और कुफ़्र के क़िले को खण्डहर बनाने के लिए। इसी तरह के बेशुमार मज़ालिम को सहा बस इस लिए कि दीन की इज़्ज़त क़ायम रहे इन्हीं की वजह से आज भी दीन बाक़ी है वरना आज सारी दुनिया बुरे रास्तों पर भटकती हौती और अंधेरे रास्ते में ठोकरे खाती फिरती। हम मुख़्तलिफ़ बलाओं में गिरफ़्तार रहते इस वजह से कुदरत ने एक रहनुमा पैदा किया जिसका नाम हुसैन (अ0) है उसने हमको दीन का एहसास क़ायम रखने के लिए इतने मज़ालिम सहे जिसकी शुरुआत उस वक़्त हुई जब मदीने के हाकिम (वलीद बिन अतबा) को यज़ीद ने हुक्म दिया कि इमाम हुसैन (अ0) से बैअत लो और उसने इमाम हुसैन (अ0) को यज़ीद की बैअत की तरफ़ दावत दी तो उस पैग़ाम को ठुकराते हुए आपने गुरबत का सफर चुना और वतन से जुदा होकर मक्का आए यहाँ आप तक़रीबन पाँच महीने रहे मगर यहाँ भी आपके ख़ून के बहाने का सामान किया गया फिर इराक़ की तरफ़ निकले मगर रास्ते ही में यज़ीद की फ़ौज आ गई और उसके घेरे में आप कर्बला पहुँचे। यज़ीद की फौजें भी बैअत का सवाल करती थीं मगर इमाम हुसैन (अ0) ने बैअत न की तो आप पर और आपके साथियों पर पानी बन्द कर दिया और फिर आशूर के दिन सुबह से अस्र तक 72 कुर्बानियाँ पेश करके हज़रत इमाम हुसैन (अ0) तीन दिन के भूखे–प्यासे शहीद हो गये और ख़ानदाने रिसालत की बीबियाँ शहर–शहर फिराइ गईं। यह सब ज़ुल्म इमाम (अ0) ने बर्दाश्त किये और हमको सच्चे रास्ते से भटकने नहीं दिया। यह है वाक़ेअ–ए–कर्बला जिसे हम मुहर्रम में याद करते हैं। ☐☐☐

मद्हे रसूल (स०) व इमाम सादिक़ (अ०)

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी' साहेबा

फिर हो रही है सादिक़े आले नबी (अ०) की बात
आलम में आम हो गई है रौशनी की बात
आले नबी की बात में है ज़िन्दगी की बात
और उनको भूल जाओ तो है मौत ही की बात
यह है ख़ुदी की बात कि मद्हे इमाम कर
ग़ैरों का तज़किरा है फक़त बेख़ुदी की बात
मैं हूँ असीरे उलफ़ते औलादे मुस्तफ़ा (स०)
आज़ादी जिसको कहते हो वह है कभी की बात
मस्ऊल अब सवाल पे नाराज़ होते हैं
डरते हैं बढ़ न जाए कहीं आगही की बात
मौलाए काएनात हैं वह, इतना है सबब
छाई है कुल ज़माने पे मौला अली (अ०) की बात
बाक़िर (अ०) के घर से लिपटी हैं रौशन ज़मीरियाँ
जिसको भी देखो करता है तक़दीर ही की बात
जाफ़र (अ०) ने लो उलूम के दरया बहा दिये
सच में इसी को कहते हैं दरया दिली की बात
बीमारे इश्क़े आले नबी हो के मर "नदा"
इसमें छुपी हुई है तेरी ज़िन्दगी की बात

□□□

सरकारे दो जहाँ की मुहब्बत के नाम पर
आपस के इख़्तेलाफ को क़ुर्बान कीजिये।
"अल्लामा नज्म आफ़न्दी"

मेरे सरकार है दुनिया की इज़्ज़त आपके दर से
फ़लक ने भीक में पाई है रफ़अत आपके दर से
नहीं है बे सबब दुनिया को उलफ़त आपके दर से
है वाबस्ता ज़माने की ज़रूरत आपके दर से
मरीज़ाने विलाए मुर्तज़ा बेहद तवाना हैं
अजब अन्दाज़ से बटती है सेहत आपके दर से
हमें 'ला तक़नतू मिर्रह्मतिल्लाह" पर अक़ीदा है
कनीज़ों को है उम्मीदे शिफ़ाअत आपके दर से
अदु–ए–जाँ से भी हमदर्दियाँ क्या ख़ूब सीरत है
जहाँ ले दर्से मेयारे शराफत आपके दर से
जिन्हें जाना है जन्नत आएं वह सब आपके दर तक
कि देखा जा रहा है बाबे जन्नत आपके दर से
यही लगता है जैसे दौलते कौनैन पाई है
बहुत ही ख़ुश हैं पाबन्दे मुहब्बत आपके दर से
हैं सरदार जवानाने जिनाँ जब आपके घर में
तो फिर बेशक मिलेगी सबको जन्नत आपके दर से
ख़ुदा रक्खे दरे जूदो करम है आप ही का दर
वह काफ़िर है जिसे होए शिकायत आपके दर से
जिसे भी आपके दर से मुहब्बत है वह ज़िन्दा है
वह है मुर्दा जिसे भी अदावत है आपके दर से
फसादो इन्तेशारो तफ़रक़ा की नज़र थी दुनिया
ज़माने को मिला पैग़ामे वहदत आपके दर से
"नदल हिन्दी" सवाली है तो बेशक आपके दर की
उसे मिलता ही है हसबे ज़रूरत आपके दर से

□□□

मुरसले आज़म (स०) ने फ़रमाया

1– इन्सान गुनाह की वजह से अपनी मुअय्यन (क़िस्मत की) रोज़ी से भी महरूम हो जाता है।

2– जो शख़्स झूठ बोल कर लोगों को हंसाता है उस पर बड़ा अफ़सोस है।

3– जो अपना सामान ख़ुद उठाये वह घमण्ड से महफ़ूज़ रहेगा।

4– जिसका लिबास राह चलते हुए ज़मीन पर रगड़ता हो (बड़ा होने की वजह से) तो क़यामत के दिन ख़ुदावन्दे आलम उसकी तरफ़ नज़र भी न करेगा।

5– नेक साथी तन्हाई से बेहतर है और तन्हाई ख़ामोशी से बेहतर है और ख़ामोशी शर व फ़साद से बेहतर है।

6– बेहतरीन नेकी लोगों में इत्तेहाद क़ायम करना है।

7– ज़रूरतमन्दों की मदद करने से बुरी मौत से नजात मिलती है।

8– फ़ुज़ूल बातचीत से परहेज़ करो और ज़रूरत भर ही बोला करो।

9– ज़बान के अलावा कोई चीज़ ज़्यादा देर क़ैद किये जाने की हक़दार नहीं है।

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) ने फ़रमाया

1– नेक बातें लिखो और उनको अपने भाइयों में तक़सीम करो

2– अगर कोई तुम पर एहसान करे तो उसके एहसान को चुकाओ और अगर यह नहीं कर सकते हो तो उसके लिए दुआ करो।

3– जिस घर में या मजलिस (मीटिंग) में मुहम्मद (स0) का नाम मौजूद हो वह बरकत वाला और मुबारक है।

4– शुरु वक़्त में नमाज़ अदा करो और अपने दीन की बुनियाद को मज़बूत करो।

5– खुदा की खुशी माँ–बाप की ख़ुशी के साथ है।

6– जो शख़्स बुराई से दूरी इख़्तियार करता है उसे इज़्ज़त मिलती है।

7– अपने माँ–बाप से नेकी करो ताकि तुम्हारी औलाद तुम से नेकी करे।

8– खुदा उस शख़्स पर रहमत नाज़िल करे जो इल्म को ज़िन्दा रखे।

9– नेक काम इन्सान को मुसीबतों से बचाते हैं।

इदारा

मुख्य समाचार

मजलिसे उलमा व ख़ुतबा का नाम अब मजलिसे उलमाए हिन्द

इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब लखनऊ के कान्फ्रेंस हाल में 6 जनवरी 2008ई0 को मजलिसे उलमा व ख़ुतबा के मिम्बरों की एक मीटिंग हुई जिसमें मजलिसे उलमा व ख़ुतबा के नाम को बदल कर उसका नाम ''मजलिसे उलमा–ए–हिन्द'' रखा गया और इसके अलावा आज कई अहम फैसले हुए और इसके ओहदेदारों का चुनाव भी पूरा हो गया। आज चुने गये उलमा–ए–हिन्द के जनरल सिक्रेट्री मौलाना कल्बे जवाद ने बताया कि 25–26 नवम्बर 2007ई0 को हुए दो दिवसीय इजलास में अहम फैसलों पर अमल करना ज़रूरी था। इसलिए मज़हबी तालीम के लिए ''हज़रत जौन दारुत्तबलीग़'' का शुभारम्भ इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब में किया गया है।

इसके अलावा साढ़े तीन बजे उलमा की मौजूदगी में जदीद तालीम के लिए सज्जादिया नगर कालोनी में सज्जादिया चेरीटेबल कालेज की बुनियाद रखी गई, इस कालेज को आगे चलकर डिग्री कालेज के दर्जे तक ले जाया जाएगा। इसके अलावा कुछ सन्जीदा मौजूआत पर ग़ौर किया गया। तमाम मिम्बरों की मौजूदगी में इस मीटिंग में ओहदेदारों के चुनाव उलमा की राय से हुए जिसमें मौलाना सै0 अली तक़वी साहब को अध्यक्ष और क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब (इमामे जुमा, लखनऊ) को जनरल सिक्रेट्री बनाए जाने के साथ–साथ मौलाना हुसैन मेहदी साहब महाराष्ट्र, आग़ा सुलतान साहब बंगलौर, प्रोफेसर कमालुद्दीन अकबर साहब इलाहाबाद, मौलाना ग़ुलाम हुसैन नूरी साहब श्रीनगर, मौलाना अदील साहब बंगलौर को उपाध्यक्ष की हैसियत से चुना गया और पाँच सिक्रेट्रीः मौलाना सफदर हुसैन साहब, मौलाना मुहम्मद रज़ा ग़ुरवी साहब अहमदाबाद, मौलाना शैख़ मुहम्मद असकरी साहब दिल्ली, मौलाना तक़ी रज़ा साहब आँध्रप्रदेश, मौलाना अब्बास अली ज़ैदी साहब बंगाल और पाँज ज्वाइन्ट सिक्रेट्रीः मौलाना जलाल हैदर साहब दिल्ली, मौलाना तस्नीम रज़ा साहब ज़ैदपुरी, मौलाना फिरोज़ साहब राजस्थान, मौलाना मुख़्तार हुसैन साहब श्रीनगर, और मौलाना महफ़ूज़ुल हसन साहब जौनपुर का चुनाव अमल में आया।

दारुत्तबलीग़ इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब लखनऊ में फारसी स्पीकिंग कोर्स

दारुत्तबलीग़ हज़रत जौन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब में इरानी कल्चर हाउस और नूरे हिदायत फाउण्डेशन के ज़ेरे एहतेमाम 15 दिवसीय फारसी स्पीकिंग कोर्स चलाया गया। जिसका शुभारम्भ क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी की सरपरस्ती में 13 फरवरी 2008ई0 को 2 बजे दारुत्तबलीग़ में हुआ। जिसमें ईरानी कल्चर हाउस से ख़ास मेहमान की हैसियत से आए डाक्टर क़ासिम मुरादी, डाक्टर अब्दुल्लाह अमीरी व ख़ानम ज़हरा अमीरी, उस्ताद डाक्टर वलियुलहक़ अन्सारी, डाक्टर ख़ान मुहम्मद आतिफ, डाक्टर आरिफ एय्यूबी, डाक्टर ग़ुलाम नबी अहमद उस्ताद लखनऊ युनिवर्सिटी व हुज्जतुल इस्लाम डाक्टर गुलज़ार अहमद ख़ान उस्तान युनिटी कालेज ने शिरकत की और फारसी ज़बान के बारे में अपने फिक्री ख़यालात का इज़्हार किया।

आख़िर में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब ने अपनी तक़रीर में दीनी तलबा को मुख़ातब करते हुए कहा कि हमारा ज़्यादातर मज़हबी ज़ख़ीरा अरबी और फारसी ज़बान में है इसलिए बग़ैर फारसी ज़बान के हम मज़हबी मालूमात बेहतर तरह से हासिल नहीं कर सकते इसलिए हमें चाहिए कि हम फारसी ज़बान ज़्यादा से ज़्यादा जानने की कोशिश करें।

इमाद मुग़निया की शहादत पर हसन नस्रुल्लाह का ख़िताब

लेबनान क़ौमी इज़्ज़त व शराफत की सरज़मीन है!

हिज़्बुल्लाह के सरबराह सै0 हसन नस्रुल्लाह ने शहीद मुग़निया के जनाज़े के मौक़े पर अपने अहम ख़िताब में ताकीद की है कि लेबनान क़ौमी इज़्ज़त व शराफत की सरज़मीन है। याद रहे कि हिज़्बुल्लाह के सरबराह हसन नस्रुल्लाह ने तन्ज़ीम के कमाण्डर इमाद मुग़निया की शहादत की ज़िम्मेदारी इसराईल पर लगाते हुए कहा है कि इसराईल ने जंग का मैदान लेबनान से बाहर चुना है और उसको इस हमले का जवाब लेबनान से बाहर दिया जायगा। याद रहे कि इसाराईल ने इमाद मुग़निया को बुज़दिलाना हमले में शहीद करने की ज़िम्मेदारी क़बूल कर ली है और इमाद मुग़निया को सीधे तौर पर इसराईली प्रधानमंत्री यहूद ओलमर्ट के हुक्म से शहीद किया गया है। इमाद मुग़निया की शहादत के बाद पूरी इस्लामी दुनिया में इसराईल और अमरीका के ख़िलाफ सख़्त ग़म व गुस्सा पाया जाता है।

इरान का जदीद यूरेनियम सेण्टरी फ़्युजर के तजरेबात शुरु

ईरान ने जदीद यूरेनियम सेण्टरी फ्युजर के तजरेबात शुरु कर दिये हैं। आलमी इदारा बराए जौहरी तवानाई के एक सिफारतकार जो कि वियाना में तैनात हैं ने दावा किया है कि ईरान ने पी0टू सेण्टरी फ्युजर की यूरेनियम अफज़ूदगी गैस के साथ अस्ल तजरेबात शुरु कर दिये हैं जिसका मक़सद यूरेनियम अफजूदगी करना है। सिफारतकार ने कहा कि ईरान की यह सरगर्मी अक़वामे मुत्तहिदा की सलामती काउंसिल के मुतालबात को रद करने की तरह है। सिफारतकार ने कहा कि ईरान की सरगर्मी से ज़ाहिर होता है कि वह अपने नये सेण्टरी फ्युजज़ को तरक़्क़ी देना चाहता है। उधर वाशिंगटन में अमरीकी इण्टलिजेंस इदारे के आला ओहदेदार ने भी कहा है कि ईरान अपनी जौहरी सलाहियतों में इज़ाफे के लिए बराबर काम कर रहा है। ईरान का इसरार है कि वह यूरेनियम अफज़ोदगी जौहरी ईंधन बनाने के लिए कर रहा है जिसका मक़सद तवानाई की शहरी ज़रूरियात को पूरा करना है जबकि अमरीका और मग़रिब का दावा है कि ईरान की जौहरी तरक़्क़ी अस्ल में जौहरी हथियार बनाने के लिए

काएदे मिल्लत की क़यादत में लखनऊ के अज़ा के जुलूसों को बहाल करने के लिए अज़ीमुश्शान मुज़ाहेरा

14 मुहर्रम 2008ई0 को तारीख़ी इमामबाड़ा आसफी में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी की क़यादत में अज़ा के तमाम जुलूसों की बहाली के लिए अज़ीमुश्शान मुज़ाहेरा हुआ इसके बाद अज़ीम मजमे ने क़ाएदे मिल्लत के साथ पुलिस लाइन जाकर गिरफ्तारियाँ दीं। आसफी इमामबाड़े से पुलिस लाइन तक पूरे रास्ते नार–ए–तकबीर अल्लाहु अकबर, नारा–ए–रिसालत या रसूलल्लाह, नारा–ए–हैदरी या अली और या हुसैन या हुसैन की सदाएं बुलन्द थीं। पुलिस लाइन पहुँच कर क़ाएदे मिल्लत ने एक मजलिस को भी सम्बोधित किया।

क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद ने मजमे को मुख़ातिब करते हुए कहा कि इमाम हुसैन का ग़म मनाने और उनके मातम पर पाबन्दी लगाने पर इमाम हुसैन के मानने वाले दरया की तरह उबल पड़ेंगे और जेलों में भी मातम होंगे। तक़रीर के बाद एक ज्ञापन भी दिया गया जिसमें इस बात का मुतालबा किया गया कि जल्दी से जल्दी हमारे तमाम जुलूसों पर लगी पाबन्दी ख़त्म की जाए।